Result Mitra Daily Magazine

ISKCON एवं चैतन्य महाप्रभु

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में बांग्लादेश की शीर्ष अदालत ने गुरुवार (28 नवंबर) को "इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस" (ISKCON) पर प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया।
- ज्ञातव्य है कि इस सप्ताह की शुरुआत में बांग्लादेश के हिंदू नेता "चिन्मय कृष्ण दास" की गिरफ्तारी के बाद भड़की हिंसा के प्रतिक्रिया स्वरूप ISKCON संगठन पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई थी।
- इसी सप्ताह मंगलवार को "चिन्मय कृष्ण दास" की गिरफ्तारी के बाद चटोग्राम में पुलिस और कृष्ण दास के समर्थकों के बीच झड़प में सहायक सरकारी अभियोजक सैफुल इस्लाम अलिफ की मौत हो गई थी।
- ISKCON बांग्लादेश के महासचिव चारु चंद्र दास ब्रह्मचारी के अनुसार यह संगठन कभी भी सांप्रदायिक गतिविधियों में शामिल नहीं रहा एवं जहां तक चिन्मय कृष्ण दास का मामला है, उन्हें पहले ही इस संगठन से नियमों के उल्लंघन करने के आरोपों में निष्कासित कर दिया गया था।

ISKCON बांग्लादेश पर प्रतिबंध लगाने की मांग किसने की ?

- बांग्लादेश की जातीयतावादी एनजीबी फोरम जो खालिद जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (BNP) से संबंधित है तथा बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति शेख हसीना को सत्ता से हटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले छात्र आंदोलन के नेताओं ने ISKCON बांग्लादेश पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान किया था।
- चिन्मय कृष्ण दास जो कि बांग्लादेश सम्मिलिता सनातनी जागरण जोते के प्रवक्ता है, को इस सप्ताह सोमवार को ढाका के हजरत शाहजलाल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से गिरफ्तार कर लिया था।
- चिन्मय कृष्ण दास पर राजद्रोह के आरोप के साथ उन्हें चटोग्राम की निचली अदालत ने जमानत देने से इनकार करते हुए मंगलवार को जेल भेज दिया।

ISKCON क्या है ?

- ISKCON यानि इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शियसनेस जिसे आमतौर पर "हरे कृष्णा आंदोलन" के रूप में भी जाना जाता है, एक गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय से संबंधित बताता है।
- गौड़ीय–वैष्णव संप्रदाय, वैदिक या हिंदू संस्कृति में एकेश्वरवादी परंपरा से संबंधित है।
- दार्शनिक रूप से गौड़ीय–वैष्णव संप्रदाय हिंदू धर्म के संस्कृत ग्रंथों भगवत गीता और भगवत पुराण (श्रीमद्भागवत)पर आधारित है।
- श्रीमद्भागवत भक्ति योग परंपरा का ऐतिहासिक ग्रंथ है, जो यह बतलाता है कि सभी जीवित प्राणियों के लिए अंतिम लक्ष्य "भगवान कृष्ण" के प्रति उनके प्रेम को फिर से जागृत करना है।
- ISKCON की स्थापना 13 जुलाई 1966 को ए सी भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद ने न्यूयॉर्क (USA) में की थी।
- ए सी भक्ति वेदांत स्वामी प्रभुपाद (1896–1977) बंगाल (वर्तमान पश्चिम बंगाल) से जुड़े थे, जिसके कारण ISKCON का वर्तमान बांग्लादेश में महत्वपूर्ण उपस्थिति विकसित की गई।
- ISKCON का मुख्य मुख्यालय पश्चिम बंगाल के मायापुर में है।
- ISKCON द्वारा माने जाने वाले गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय की स्थापना "चैतन्य महाप्रभु" ने की थी, जिन्होंने पूरे बंगाल में तेजी से इस संप्रदाय को भक्ति रूप में फैलाया।
- ऐसा माना जाता है कि भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद का चैतन्य महाप्रभु से सीधा संबंध था, जिसने 1965 में चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय वैष्णववाद को पश्चिम के देशों में फैलाया।
- वर्तमान में पूरे विश्व में ISKCON के 800 से अधिक केंद्र स्थापित है एवं इसके लाखों अनुयायी है।

- पूरे विश्व में भारत के अलावे यूरोप में ISKCON के 135 केंद्र, रूस में 31, संयुक्त राज्य अमेरिका में 56, अफ्रीका में 56 केंद्र स्थापित है।

भारत की प्रतिक्रिया :

- इस वर्ष बांग्लादेश की सत्ता से शेख हसीना की सरकार हटने के बाद भारत सरकार द्वारा बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों पर हमले की रिपोर्ट पर बार-बार चिंता जताई गई है।
- भारत सरकार ने मंगलवार (26 नवंबर) को चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए बांग्लादेश सरकार से हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यक समूहों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया।
- पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर चिंता व्यक्त की है।

भारत में ISKCON के प्रमुख केंद्र :

- भारत में ISKCON से संबंधित दुनिया के सबसे ज्यादा केंद्र हैं।
- भारत में ISKCON से संबंधित 800 से अधिक मंदिर, 12 राज्य–मान्यता प्राप्त शैक्षणिक संस्थान एवं 25 से अधिक रेस्तरां और तीर्थ होटल है।

ISKCON से संबंधित प्रमुख मंदिर :

➢ मायापुर वैदिक तारामंडल का चंद्रोदय मंदिर

- इस मंदिर को हिंदू धर्म के गौड़ीय–वैष्णववाद के संस्थापक चैतन्य प्रभु के जन्म स्थान मायापुर (पश्चिम बंगाल) में बनाया गया है।
- लगभग 5 लाख वर्ग फुट में फैला यह मंदिर लगभग 100 मीटर ऊंचा है, जिसकी लागत लगभग 75 मिलियन डॉलर है।
- इस मंदिर के परिसर में वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान पर आधारित एक तारामंडल है, जो श्रीमद् भागवत में वर्णित वैदिक कला, विज्ञान और संस्कृति के बारे में बताई जाती है।

➢ श्री कृष्ण–बलराम मंदिर (वृंदावन)

- ऐतिहासिक रूप से हिंदू धर्म ग्रंथ के अनुसार कृष्ण और बलराम के वैदिक काल में निवास क्षेत्र उत्तर प्रदेश के वृंदावन के रमन रेती क्षेत्र में इस मंदिर का निर्माण कराया गया है।

- इस मंदिर का निर्माण कृष्ण और बलराम से जुड़े अन्य पवित्र स्थलों गोवर्धन पहाड़ी, मथुरा महल और विभिन्न पवित्र झीलों के करीब बनाया गया है।

➢ श्री श्री राधा–रास बिहारी मंदिर (रायपुर)

- अगस्त 2024 में उद्घाटन किया गया यह मंदिर छत्तीसगढ़ के रायपुर में स्थित है, जो छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े मंदिर के रूप में जाना जाता है।

➢ अन्य मंदिर :

- वृंदावन चंद्रोदय मंदिर (बेंगलुरु)
- राधा पार्थसारथी मंदिर (नई दिल्ली)
- राधा कृष्ण मंदिर (चेन्नई)
- श्री गौरा राधा मुकुलानंद मंदिर (सेलम, तमिलनाडु)
- राधा माधव सुंदर मंदिर (सिलीगुढ़ी, पश्चिम बंगाल)

चैतन्य महाप्रभु :

- चैतन्य महाप्रभु को वैष्णव धर्म के भक्ति योग के परम प्रचारक एवं भक्ति काल के प्रमुख कवियों में से एक माना जाता है।
- चैतन्य महाप्रभु का जन्म 18 फरवरी 1486 ई. को पश्चिम बंगाल के नवद्वीप (नादिया) नामक गांव में हुआ था, जिसे वर्तमान में मायापुर के नाम से जाना जाता है।
- इन्होंने वैष्णव धर्म में गौड़ीय संप्रदाय की आधारशिला रखी एवं भजन गायकी की नई शैली को जन्म दिया।
- 32 अक्षरीय भजन "हरे–कृष्ण, हरे–कृष्ण, कृष्ण–कृष्ण, हरे–हरे। हरे–राम, हरे–राम, राम–राम, हरे–हरे।।" इन्हीं की देन है।
- बाद में इस महामंत्र को "तारक ब्रह्म महामंत्र" के नाम से जाना गया।
- मात्र 24 वर्ष के आयु में चैतन्य महाप्रभु ने गृहस्थ आश्रम का त्याग कर सन्यास ग्रहण किया।
- 14 जून 1534 में इनकी मृत्यु जगन्नाथ पुरी में हुई।
- चैतन्य महाप्रभु को अन्य नामों विश्वम्भर मिश्र, निमाई पंडित, गौरहरि, गौर सुंदर और श्रीकृष्ण चैतन्य भारती के नाम से भी जाना जाता है।
- |